21 संसाधन प्रदेश

(Resource Regions)

संसाधन प्रदेश का अर्थ

पृथ्वी तल पर ऐसा एक समान विस्तृत प्रदेश, जिसमें किसी एक प्रमुख संसाधन द्वारा उस समस्त प्रदेश की प्राय: एकरूपता और विशेषता प्रकट हो, अथवा विभिन्न संसाधन के मिश्रित स्वरूप से एकरूपता और समानता रखने वाला प्रदेश, संसाधन प्रदेश होता है। दूसरे शब्दों में, **मानव संसाधन** एवं **प्राकृतिक संसाधनों** की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप निर्मित दृश्य भूमि की दृष्टि से एक विशिष्ट संगति (accordance) रखने वाला समस्त क्षेत्र, संसाधन प्रदेश कहलाता है।

संसार के संसाधन प्रदेशों का वर्गीकरण
(Classification of Resource Regions of the World)

संसार को संसाधन प्रदेशों में वर्गीकृत करने के लिये सामान्यीकरण की दृष्टि से **हर्बर्टसन** द्वारा प्रस्तावित प्राकृतिक प्रदेशों को आधार माना जाता है। संसाधन प्रदेशों के सीमांकन में प्राकृतिक एवं मानवीय वातावरण के सम्मिलित तत्वों का प्रभाव रहता है। अत: संसाधन प्रदेश की समरूपता एवं प्रमुख विशेषताओं को दर्शाने के लिये उनके सीमांकन में निम्नलिखित आधार तत्वों के प्रभाव को विचारा जाता है—

1. प्राकृतिक वातावरण (Natural or physical environment) **के आधार तत्व**—(i) प्रदेश की ग्लोबीय अवस्थिति, (ii) जलवायु की दशायें, (iii) वनस्पति की दशायें, (iv) मृदा की दशायें, (v) खनिज संसाधन की उपलब्धि, (vi) शक्ति संसाधन की उपलब्धि, आदि।

2. मानवीय वातावरण (Human environment) **के आधार तत्व**—(i) जनसंख्या की विशेषतायें, (ii) मानव संस्कृति और सामाजिक पारिस्थितिकी (social ecology), (iii) तकनीकी दक्षता के विकास की दशा, (iv) आर्थिक विकास एवं संसाधन उपयोग की अवस्थायें, (v) भविष्य में प्रदेश के संसाधन विकास की सम्भावनायें (possibilities)।

इन तत्वों के आधार पर संसार को निम्नलिखित **संसाधन विकास प्रदेशों** (resource development regions) में वर्गीकृत किया जा सकता है—

1. संसाधन विकास की सीमित सम्भावनाओं के प्रदेश (Regions of limited possibilities of resource development)—(i) ध्रुवीय क्षेत्र (polar lands), (ii) उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्र (hot deserts)।

2. संसाधनों के अल्पविकास के प्रदेश (Regions of backward development of resources)—(i) मध्य अक्षांशीय वन (mid-latitude forests), (ii) उष्ण कटिबन्धीय वन (tropical forests), (iii) घास के मैदान (grass lands)।

3. संसाधनों के उच्च विकास के प्रदेश (Regions of high development of resources)—(अ) उच्च स्तरीय विकसित प्रदेश (highly developed regions)—खनिज संसाधनों तथा शक्ति संसाधनों के सदुपयोग एवं वृहद् निर्माण

Scanned with CamScanner

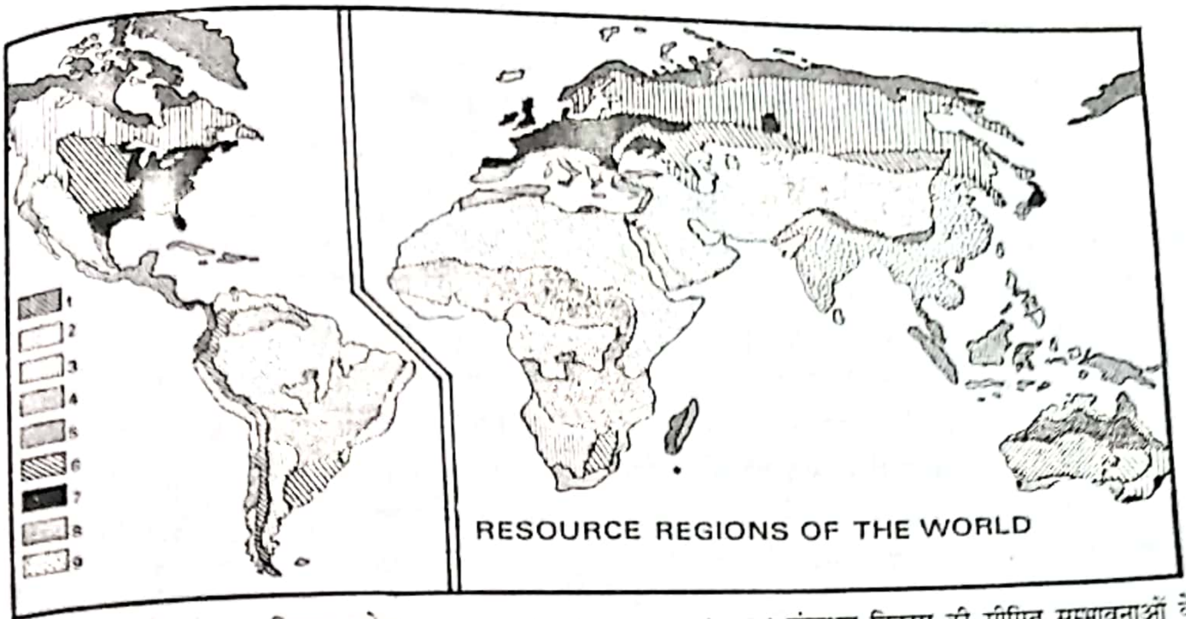

चित्र 1. संसार के संसाधन विकास प्रदेश (resource development regions)। संसाधन विकास की सीमित सम्भावनाओं के प्रदेश—1. ध्रुवीय क्षेत्र, 2. उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्र, संसाधनों के अल्प विकास के प्रदेश, 3. मध्य अक्षांशीय वन, 4. उष्णकटिबन्धीय वन, 5. उष्णकटिबन्धीय घास के मैदान, 6. शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान; संसाधनों के उच्च विकास के प्रदेश, 7. बृहद् निर्माण उद्योग के प्रदेश, 8. भूमध्यसागरीय फलोत्पादक प्रदेश, 9. एशियाई प्रगतिशील विकास के प्रदेश।

...ों के प्रदेश। (ब) मध्य स्तरीय विकसित प्रदेश (mid-developed regions)—(i) भूमध्यसागरीय प्रदेश : फलोत्पादक, (ii) एशियाई प्रगतिशील विकास के क्षेत्र : जनसंख्या की अधिकता के क्षेत्र।

1. संसाधन विकास की सीमित संभावनाओं के प्रदेश

(Regions of Limited Possibilities of Resource Development)

इन क्षेत्रों में प्राकृतिक वातावरण की प्रतिरोधकता (resistance) अत्यधिक है जिनके कारण संसाधन-उपयोग में अत्यधिक कठिनाई होने से उनका सीमित विकास हुआ है। जलवायु की प्रबल कठोरता के कारण इन प्रदेशों में मानव-निवास तथा संसाधन विकास की संभावनायें बहुत सीमित हैं। इस प्रदेश के अन्तर्गत संसार के निम्नलिखित दो क्षेत्र हैं—

(1) ध्रुवीय क्षेत्र

इस क्षेत्र का विस्तार दोनों गोलार्धों में $66\frac{1}{2}°$ अक्षांश से लेकर ध्रुव तक है। उत्तरी गोलार्ध के अन्तर्गत इस ध्रुवीय क्षेत्र में आर्कटिक क्षेत्र, कनाडा का अधिकांश उत्तरी भाग, पूर्व सोवियत संघ के उत्तरी भाग, ग्रीनलैंड तथा यूरोप में लैपलैंड स्थित हैं। दक्षिणी गोलार्ध में अन्टार्कटिका इस प्रदेश के अन्तर्गत आता है।

इन क्षेत्रों में प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत हिमीय जलवायु (glacial climate) की प्रमुखता है। टुण्ड्रा प्रदेशों में ध्रुव के समीप सदैव तापक्रम 0°C से नीचे रहता है तथा ये क्षेत्र सारे वर्ष भर बर्फ से आच्छादित रहते हैं; परन्तु ध्रुव से विषुवत् रेखा की ओर को तापक्रम कुछ बढ़ता है तथा 3°C से 5°C तक मिलता है। इस क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु केवल दो माह की होती है जिसमें तापक्रम 0°C से 10°C तक मिलता है। टुण्ड्रा क्षेत्रों में केवल लाइकेन (lichen), मॉस (moss) तथा छोटी झाड़ियाँ आल्डर, क्रॉबेरी, आदि उगती हैं। आर्कटिक वृत्त के समीपवर्ती क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु में विविध प्रकार के फूल भी उग आते हैं जो शीघ्र ही शीत ऋतु प्रारम्भ होने पर बर्फ की चादर द्वारा ढक दिये जाते हैं। यहाँ वर्षा बर्फ के रूप में होती है, जिसकी औसत वार्षिक मात्रा लगभग 30 सेमी है। इन क्षेत्रों में वाष्पीकरण (evaporation) कम होने से धरातल आर्द्र रहता है तथा असंख्य झीलों और दलदली क्षेत्रों का निर्माण होता रहता है, जिससे यहाँ अन्तःस्थलीय अपवाह तन्त्र (inland drainage system) निर्मित हो गया है। अण्टार्कटिका में सर्वत्र हिमनद मिलते हैं तथा बर्फ की तेज आँधियाँ चलती रहती हैं।

मानव निवास के लिये अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियाँ होने के कारण अण्टार्कटिका लगभग मानव रहित है। टुण्ड्रा में कुछ अनुकूल क्षेत्रों में विरल जनसंख्या है। इस क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व 1 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी के लगभग है। जबकि अण्टार्कटिका महाद्वीप पूर्णतः निर्जन है। वहाँ केवल कुछ देशों

Scanned with CamScanner

के अन्वेषणकर्त्ता और वैज्ञानिकों के दल ऊपरी बर्फ की सतह के नीचे गुफायें बनाकर रहते हैं। उत्तरी गोलार्ध में मानव ने जीवनयापन के लिए आखेट तथा मछली पकड़ने की अर्थव्यवस्था को अपनाया हुआ है। इसके अलावा रेनडियर का पालन और पशुचारण भी इस क्षेत्र के मानव-वर्गों का मुख्य व्यवसाय है। कनाडा व ग्रीनलैंड के कुछ भाग में ऐस्किमो जन-जाति के लोग निवास करते हैं, जो सील मछली के आखेट पर जीवन-निर्वाह करते हैं। यूरोप तथा पूर्व सोवियत संघ के उत्तरी भागों में लैप्स, तुंगु, चकची, याकूत, सैमोयेड्स जनजातियों के लोग रहते हैं, जो रेनडियर का शिकार तथा इसका पालन करते हैं। ये शीत ऋतु में दक्षिण की ओर तथा ग्रीष्म ऋतु में उत्तर की ओर प्रवासित होते रहते हैं। इन पर अब आधुनिक सभ्यता का धीमी गति से प्रभाव होने लगा है।

उत्तरी ध्रुव अर्थात् टुण्ड्रा प्रदेश में जल एवं स्थल दोनों पर रहने वाले पशु पाये जाते हैं। शाकाहारी स्थलीय जन्तुओं में प्रमुख मस्क, औक्स, कैरीबो, रेनडियर, खरगोश तथा मांसाहारी में ध्रुवीय भालू, लोमड़ी हैं। समुद्र के ठण्डे पानी में प्लैंकटन की अधिकता से यहाँ विभिन्न प्रकार की मछलियाँ मिलती हैं, जिनमें सील तथा वालरस मुख्य हैं। ये कुछ समय तक स्थल पर ही रह सकती हैं। अण्टार्कटिका में स्थल पर रहने वाले जन्तु नहीं होते, वहाँ केवल सील मछली तथा पेंगुइन नामक पक्षी मिलते हैं।

इस भाग में खनिजों की प्राप्ति के लिए अन्वेषण किये जा रहे हैं। जो खनिज प्राप्त हुए हैं उनका विस्तृत औद्योगिक उपयोग अभी सम्भव नहीं हो सका है। उत्तरी गोलार्ध में टुण्ड्रा प्रदेश में कुछ खानों से खनिज उत्पादन सम्भव हो गया है, उदाहरणार्थ—ग्रीनलैंड से क्राइयोलाइट (cryolite), ग्रेट बियर लेक के समीप यूरेनियम, लीना डेल्टा से कोयले तथा उत्तरी अलास्का से प्राकृतिक गैस का उपयोग मुख्य है।

इस प्रकार ये ध्रुवीय क्षेत्र मानव निवास तथा संसाधन उपयोग की दृष्टि से अत्यन्त सीमितता (limitations) के प्रदेश हैं।

[II] उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्र

ये उत्तर तथा दक्षिणी गोलार्ध में कर्क और मकर रेखाओं के बीच स्थित शुष्क एवं रेतीले भाग हैं। इनमें उत्तरी गोलार्ध में अफ्रीका का सहारा मरुस्थल, सऊदी अरब, थार और गोबी के मरुस्थल मुख्य हैं। दक्षिणी गोलार्ध में कालाहारी मरुस्थल, पेरू का मरुस्थल, पेटागोनिया एवं ऑस्ट्रेलिया के मरुस्थल मुख्य हैं। इस प्रकार ये क्षेत्र उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों गोलार्धों में 10° अक्षांश से 30° अक्षांश के मध्य स्थित हैं।

इन क्षेत्रों में जलवायु की प्रतिकूल दशाओं के कारण मानव निवास एवं संसाधनों का विकास अति सीमित है। इन क्षेत्रों में वर्षा बहुत कम (10 सेमी से भी कम) तथा अनियमित होती है। कहीं पर तो कई-कई वर्षों तक वर्षा नहीं होती; इसके कारण यहाँ शुष्कता रहती है और रेत की प्रचुरता मिलती है। इन क्षेत्रों में दैनिक तापान्तर (25°C तक) होता है। उत्तरी गोलार्ध के मरुस्थलों में औसत तापक्रम 30°C तक मिलता है; जबकि कुछ मरुस्थलीय भागों का तापमान 80°C से भी अधिक हो जाता है। दक्षिणी गोलार्ध के मरुस्थलों में तापक्रम पर महासागरों की समीपता का प्रभाव होता है और वहाँ तापान्तर कम रहता है। उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्रों में अपरदन का एक प्रभावी कारक वायु है, जो यहाँ धूल भरी आँधियाँ चलाती है।

इन मरुस्थलीय क्षेत्रों में प्राकृतिक वनस्पति के रूप में कटीली झाड़ियाँ एवं छोटी घास उगती है। यह वनस्पति मरुद्भिद् (xerophyta) कहलाती है, जो वातावरण की शुष्कता के अनुरूप अपने विभिन्न भागों अर्थात् तनों, पत्तियों, शाखाओं, जड़ों, आदि का अनुकूलन कर लेती है। कुछ स्थानों पर मरुद्यानों (oases) में खजूर का वृक्ष उगता है।

उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्रों की मिट्टियाँ कम वर्षा तथा अत्यधिक वाष्पीकरण से प्रभावित होती हैं। इनमें ह्यूमस की मात्रा बहुत कम तथा निम्न स्तर की होती है जिससे ये मिट्टियाँ अनुपजाऊ होती हैं। इस क्षेत्र का मुख्य पशु ऊँट है जो मुख्यत: सवारी के काम आता है। ऊँट में यह विशेषता है कि वह कई दिनों तक के लिए अपने पेट में स्थित थैली में पानी को एकत्रित कर लेता है तथा बिना पानी पिये रह सकता है। इसके साथ-साथ उसके खुर रेत में नहीं धंसते। इसके अलावा भेड़, बकरियाँ पाली जाती हैं, जिन्हें लेकर पशुचारक वर्ग एक स्थान से दूसरे स्थान पर चरागाहों की तलाश में घूमते हैं। इस प्रकार इन क्षेत्रों में प्रमुख व्यवसायी चलवासी पशुचारण है।

मरुद्यानों के पास निवास करने वाले लोग पशुचारण के साथ-साथ खजूर की खेती करते हैं। इन मरुस्थलीय क्षेत्रों में नदियों और समुद्र तटों के समीप के भागों में अधिक जनसंख्या मिलती है, उदाहरणार्थ, सहारा मरुस्थल में नील नदी की घाटी एक सघन आबादी का क्षेत्र है, जिसका मुख्य कारण नील नदी द्वारा जलपूर्ति है। ऑस्ट्रेलिया के मरुस्थलों में सोने की प्राप्ति के क्षेत्रों में खान खोदने वाले मानव समूह निवास करते हैं। भारत के थार मरुस्थल में भी जन-घनत्व दो मनुष्य प्रति वर्ग किमी है। मध्य एशिया के मरुस्थलीय क्षेत्रों में पेट्रोलियम शक्ति संसाधन की उपलब्धि के देशों में, जैसे—सऊदी अरब, ईरान, इराक में कुछ आर्थिक प्रगति हो पाई है, तथापि इन प्रदेशों में जल की कमी के कारण मानव के निवास के लिए प्रतिकूलता

Scanned with CamScanner

...हुई है। अतः इन क्षेत्रों में भी संसाधनों के विकास की ...स्पष्ट दिखायी देती है।

2. संसाधनों के अल्पविकास के प्रदेश (Regions of Backward Development of Resources)

इस संसाधन प्रदेश के संसाधनों का विकास अभी कम मात्रा ...हुआ है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित तीन क्षेत्र आते हैं—

...मध्य अक्षांशीय वन

...संसाधनों के अल्पविकास का यह प्रदेश टुण्ड्रा की दक्षिणी ...के सहारे-सहारे, अमेरिका में अलास्का से लेकर कनाडा ...यूरोप में नॉर्वे एवं स्केन्डिनेविया तथा एशिया में ...साइबेरिया एवं जापान के अधिकांश में, 45° उत्तरी अक्षांश से ...° उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। यह क्षेत्र उपध्रुवीय ...टैगा या मध्य अक्षांशीय वन के नाम से भी जाना ...है। इन क्षेत्रों की जलवायु टुण्ड्रा की अपेक्षा कम कठोर ...है। ग्रीष्म ऋतु में जौलाई का तापक्रम 15°C तक पहुँच जाता ...शीत ऋतु में जनवरी माह का तापक्रम –20°C तक ...है। वर्षा अधिकतर ग्रीष्म ऋतु में ही हिम के रूप में ...है। वर्षा का वार्षिक औसत 30-40 सेमी तक रहता है। ...तापक्रम के कारण वाष्पीकरण भी कम होता है, जिससे ...की न्यून मात्रा भी पौधों की वृद्धि के लिए पर्याप्त होती ...शीत ऋतु शुष्क होती है। ग्रीष्म ऋतु में दिन की लम्बाई ...से 24 घण्टे तक होती है, जिससे सूर्य के प्रकाश एवं गर्मी ...अधिक समय तक मिलने से वनस्पति तेजी से बढ़ती है।

इन क्षेत्रों का महत्वपूर्ण संसाधन प्राकृतिक वनस्पति है। ...शंकुधारी वन मिलते हैं। इन वनों में पाये जाने वाले वृक्षों ...स्प्रूस, फर, लार्च, पाइन तथा हैमलोक के वृक्ष मुख्य हैं। ...कहीं-कहीं पर नदियों के समीपवर्ती क्षेत्रों में चौड़ी पत्ती वाले ...भी मिलते हैं। इन वनों की लकड़ी नरम होती है, जिसका ...औद्योगिक कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। इन ...क्षेत्रों में उत्तर की ओर झाड़ियाँ तथा काई और लाइकेन वनस्पति मिलती है।

मध्य अक्षांशीय वनों में बहुत-से समूर वाले जानवर निवास करते हैं, जिनका शिकार करके उनसे खाल प्राप्त की जाती है। इनमें लोमड़ी, ओल्टर, बीवर, मिंक, मार्टेन, आदि पशु मुख्य हैं। कनाडा में तो फार्म बनाकर इन जानवरों को पाला जाने लगा है और इनकी खाल का विदेशों को निर्यात किया जाता है। इनके अलावा रेनडियर, कैरीबू, मस्क ऑक्स जानवरों को भी पाला जाता है। नदियों एवं असंख्य झीलों में विभिन्न प्रकार की मछलियाँ पायी जाती हैं।

क्रिस्टलीय एवं पठारी प्रदेश की पूर्वकालीन चट्टानों में महत्वपूर्ण खनिजों के भण्डार भी पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में कनाडा के लेब्राडोर में लोहा, सडबरी क्षेत्र में सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा, जस्ता, प्लेटिनम तथा निकिल आदि बहु-मिश्रित खनिज पाये जाते हैं। पूर्व सोवियत संघ में यूराल प्रदेश में मुख्य रूप से लोहा, कोबाल्ट, टंगस्टन, सीसा, निकिल, ताँबा, जस्ता, ऐलुमिनियम खनिज मिलते हैं। साइबेरिया के परतदार चट्टानों के क्षेत्र में कोयले के भण्डार पाये गये हैं। अलास्का में चाँदी एवं जस्ते के भण्डार हैं।

इस प्रदेश में जनसंख्या का औसत घनत्व 5 मनुष्य प्रति वर्ग किमी है। कुछ समुद्रतटीय एवं परिवहन सुलभ क्षेत्रों में यह घनत्व 20 मनुष्य प्रति वर्ग किमी तक मिलता है। इन क्षेत्रों के निवासी मानवों का मुख्य व्यवसाय लकड़ी काटना तथा समूर वाले जानवरों का आखेट करना है। कनाडा तथा पूर्व सोवियत संघ में इन वनों की लकड़ी से लुगदी तथा कागज़ निर्माण-उद्योग चलाये जाते हैं। इसके अलावा रेनडियरों को चराने का कार्य भी यहाँ किया जाता है। साइबेरिया के याकूत, चकची एवं स्कैण्डिनेविया के लैप्स तथा कनाडा में रेड इण्डियन मानव-समूह इस पशुचारण में लगे हैं। खनिज संसाधनों की प्राप्ति के क्षेत्रों में भी मानव वर्ग निवास करते हैं। साइबेरिया के वनों के अनुकूल उपयोग के लिये योजनायें बनायी जा रही हैं। इन प्रदेशों में परिवहन साधनों का विकास किया जाना आवश्यक है, क्योंकि तभी इन प्रदेशों के अपार वन संसाधन का सही रूप में उपयोग किया जा सकता है।

[II] उष्णकटिबन्धीय वन प्रदेश

यह प्रदेश विषुवत्रेखा के समीपवर्ती, 10° उत्तरी एवं 10° दक्षिणी अक्षांशों के मध्य स्थित है तथा मध्य अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी-पूर्वी भाग एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया में फैला हुआ है। इन क्षेत्रों में वर्ष भर उच्च तापक्रम मिलता है, जिसका वार्षिक औसत लगभग 27°C रहता है। दैनिक तथा वार्षिक तापान्तर बहुत कम रहता है। वर्षा भी सारे वर्ष भर होती रहती है, जिसका औसत लगभग 250 सेमी तक रहता है। उच्च ताप एवं अधिक वर्षा के कारण सारे वर्ष भर सघन वनस्पति उगती रहती है। यहाँ कठोर लकड़ी के वन हैं। इन वनों में मुख्यतः महोगनी, आबनूस, रोजवुड, सागौन, रबर, आदि के वृक्ष हैं। इन वृक्षों के तने काफी मोटे तथा अधिक ऊँचे (60 से 90 मीटर तक ऊँचे) होते हैं, जिनके नीचे सघन वनस्पति जैसे झाड़ियाँ तथा लतायें, आदि उगती रहती हैं। इन वनों में विभिन्न किस्मों के वृक्ष एक साथ उगते हैं; जिससे किसी एक किस्म की लकड़ी प्राप्त करना कठिन होता है।

इन प्रदेशों की मिट्टियाँ (लेटेराइट) में नमी सदैव बनी रहती है, यद्यपि जल द्वारा उनके पोषक पदार्थ प्रवाहित कर दिये जाने से उनकी उर्वरता कम हो जाती है।

Scanned with CamScanner

इस प्रदेश में विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु निवास करते हैं, जिनमें थल पर चलने वाले भारी एवं शक्तिशाली जन्तु, जैसे—हाथी, गैंडा, इत्यादि; वृक्षों पर रहने वाले बन्दर; रेंगने वाले साँप, छिपकली, गिरगिट तथा नदियों में दरियाई घोड़े एवं मगरमच्छ, आदि मुख्य हैं।

उष्ण एवं आर्द्र जलवायु इन प्रदेशों के संसाधन विकास में बाधक है। इस जलवायु की प्रतिकूल दशाओं के कारण ही यहाँ जनसंख्या का घनत्व बहुत कम है। दक्षिणी अमेरिका व अफ्रीका के इन प्रदेशों में 5 मनुष्य प्रति वर्ग किमी जन-घनत्व है। समुद्र के समीपवर्ती भागों तथा पठारी भागों पर कुछ अधिक मानव निवास है। अधिकांशतः यहाँ आदिम जनजातियाँ, अफ्रीका में पिगमी, मलाया में सेमांग और सकाई, आदि निवास करती हैं। ये मानव वर्ग वनों से विभिन्न पदार्थों को एकत्रित करके तथा आखेट करके जीवन निर्वाह करते हैं। कुछ उच्च भूमियों पर पशुचारक वर्ग, जैसे—कीनिया व युगाण्डा की उच्च पठारी भूमियों पर मसाई (Masai) जन-जाति निवास करती है।

उष्णकटिबन्धीय वन प्रदेशों का मुख्य उत्पादन नारियल है। इसके अतिरिक्त सिनकोना वृक्ष की छाल जिससे कुनैन बनती है, चमड़ा रंगने के पदार्थ एवं जड़ी-बूटियाँ एकत्रित की जाती हैं। कुछ उपयुक्त भागों से जंगलों को काटकर वहाँ, यूरोपवासियों ने कहवा, चाय, कोको एवं रबर के बागान लगवाये हैं। इनके अलावा ये चावल, गन्ना, केला, जूट और तम्बाकू की बागानी कृषि भी करवाते हैं। कुछ क्षेत्रों में खनिज पदार्थ भी निकाले जाते हैं, जैसे—मलाया से टिन; कांगो से ताँबा; ब्राजील से मैंगनीज़, सोना, हीरे; मध्य अफ्रीका व घाना से सोना; दक्षिणी-पूर्वी एशिया से पेट्रोलियम, आदि। इन क्षेत्रों में कोयले और लोहे खनिजों का अभाव है, केवल नाइजीरिया व ब्राज़ील में कुछ मात्रा में कोयला व लोहा मिलता है। इस प्रकार यूरोपियन (विदेशी) लोगों ने अपनी तकनीकी एवं ज्ञान का प्रयोग करके यहाँ के संसाधनों का कुछ विकास किया है। भविष्य में बागान कृषि (plantation agriculture) एवं वन से प्राप्त उत्पादनों के और अधिक विकास की सम्भावनायें हो सकती हैं।

[III] घास के मैदान

इस प्रदेश के अन्तर्गत उष्णकटिबन्धीय घास के मैदानों में सवाना (Savannas) एवं लानोज़ (Lanos) और शीतोष्ण कटिबन्धीय (temperate) घास मैदानों में स्टेपी (Steppes), प्रेयरीज़ (Prairies), डाउन्स (Downs), पम्पास (Pampas) और वेल्ड्स (Velds) आते हैं।

उष्णकटिबन्धीय घास के मैदान—10° उत्तरी अक्षांश से 30° दक्षिणी अक्षांश के मध्य स्थित हैं। उनको विभिन्न नामों से पुकारा जाता है, उदाहरणार्थ—वेनेजुएला में लानोज़, ब्राज़ील में कम्पाज़, बोलिविया में ग्रानचाको तथा अफ्रीका में सवाना। इन घास के मैदानों पर कुछ स्थानों पर छोटे-छोटे पेड़ भी मिलते हैं, जिस कारण इन्हें पार्कलैंड भी कहा जाता है। इन मैदानों में लम्बी रेशेदार एवं मोटी घास मिलती है। इसकी लम्बाई तीन मीटर तक होती है। विषुवतरेखा के समीप की ओर वृक्ष अधिक मिलते हैं। इन मैदानों में वर्षा ग्रीष्मकाल में होती है। ग्रीष्म में सर्वाधिक तापक्रम 20°C तक मिलता है। शुष्क ऋतु लम्बी होती है तथा उसमें घास सूखकर ज़मीन पर फैल जाती है। इस प्रकार की जलवायु में यहाँ केवल घास ही उपयुक्त उग सकती है।

इन घास के मैदानों में निवास करने वाली जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय पशुचारण है। दक्षिणी अमेरिका में लानोज़ के उच्च भागों में तथा कम्पाज प्रदेश में माँस की स्थानीय पूर्ति के लिये इसका उत्पादन किया जाता है। अफ्रीका के सवाना प्रदेशों में कुछ आदिम जन-जातियाँ पशुचारण का कार्य करती हैं, जैसे—उत्तरी नाइजीरिया के फुलानी पशुचारक वर्ग। इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्रों में घास को साफ करके कपास, तम्बाकू, ज्वार-बाजरा, आदि की कृषि भी की गई है। भविष्य में इन क्षेत्रों में स्थायी कृषि उत्पादन एवं पशुपालन व्यवसाय के वाणिज्यिक रूप से विकसित होने की सम्भावनायें हैं।

शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान—दोनों गोलार्धों में 30°C अक्षांश से 45° अक्षांश के मध्य स्थित हैं। इन्हें भी विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नामों से पुकारा जाता है, उदाहरणार्थ उत्तरी अमेरिका में प्रेयरीज, मध्य एशिया में स्टेप्पी, अर्जेण्टिना में पम्पाज, ऑस्ट्रेलिया में डाउन्स तथा दक्षिणी अफ्रीका में वेल्ड्स। इन घास के मैदानों की घास छोटी, कम-सघन एवं कोमल होती है। इन क्षेत्रों में वर्षा का औसत 40 से 60 सेमी के मध्य रहता है। अधिकांश वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है, परन्तु वर्षा की मात्रा बदलती रहती है। जाड़े का मौसम शुष्क रहता है। ग्रीष्मकाल में तापक्रम 20°C तक तथा जाड़े में –40°C तक पहुँच जाता है।

इन घास के मैदानों में चलवासी एवं वाणिज्यिक दोनों प्रकार का पशुचारण व्यवसाय होता है। यहाँ मुख्यतः दुग्ध उत्पादक पशुओं एवं भेड़ों को माँस तथा ऊन के लिये पाला जाता है। घास के मैदानों में व्यावसायिक पशुचारण के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका में अनुकूल जलपूर्ति के वृहत् मैदान सर्वाधिक उपयुक्त हैं। यहाँ पशुओं पर आधारित माँस एवं चमड़े के उद्योग ने बहुत अधिक उन्नति की है। दक्षिणी

Scanned with CamScanner

अफ्रीका संघ की उच्च वेल्ड्स भूमियों में भेड़ों एवं अन्य पशुओं का चारण ऊन व माँस की प्राप्ति के लिये किया जाता है।

जिन घास-क्षेत्रों में वर्षा का वितरण उचित है तथा उपजाऊ मिट्टी मिलती है वहाँ पर कृषि की फसलों का उत्पादन किया जाता है। संयुक्त राज्य में प्रेयरीज एवं पूर्व सोवियत संघ में स्टेपीज क्षेत्रों में गेहूँ को उत्पादित किया जाता है। इसके अलावा जौ, जई, राई और मक्का को भी उगाया जाता है। इस प्रकार इन क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन व्यवसाय साथ-साथ किया जा रहा है। ये क्षेत्र संसार के खाद्यान्न भण्डार कहलाते हैं।

3. संसाधनों के उच्च विकास के प्रदेश (Regions of High Development of Resources)

इस संसाधन प्रदेश के अन्तर्गत वे क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं, जिनमें संसाधनों की बहुलता के साथ-साथ, उनका तीव्र विकास किया गया है। इस प्रकार के क्षेत्रों में वैज्ञानिक ज्ञान व तकनीकी के अधिकतम प्रयोग द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये विभिन्न प्रकार से उपयोग किया गया है। इस संसाधन प्रदेश को निम्नलिखित उपभागों में वर्गीकृत करके अध्ययन किया जा सकता है—

1. **उच्च स्तरीय विकसित संसाधन प्रदेश** (Highly developed resource regions)—इस प्रदेश के अन्तर्गत खनिज संसाधनों तथा शक्ति संसाधनों के सदुपयोग एवं बृहद् निर्माण-उद्योग के प्रदेश आते हैं।

2. **मध्य स्तरीय विकसित संसाधन प्रदेश** (Mid-developed resources regions)—इस प्रदेश के अन्तर्गत (i) भूमध्यसागरीय फलोत्पादक प्रदेश तथा (ii) एशियाई प्रगतिशील विकास के जनसंख्या की अधिकता के क्षेत्र सम्मिलित हैं।

[I] उच्च स्तरीय विकसित प्रदेश–बृहद् निर्माण उद्योग के प्रदेश

खनिज एवं शक्ति संसाधनों का उपयोग करने वाले देश तकनीकी दृष्टि से विकसित हैं। इन विकसित राष्ट्रों में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, यूरोपीय देश, पूर्व सोवियत संघ और जापान सम्मिलित हैं। इन देशों ने समुन्नत तकनीकी के प्रयोग से खनिज एवं शक्ति संसाधनों का सदुपयोग कर बृहद् निर्माण उद्योगों का विकास किया है। यह बृहद् निर्माण उद्योग का संयुक्त राज्य अमेरिका में बृहद् झील (great lakes) क्षेत्र से लेकर अप्लेशियन क्षेत्र तक; यूरोप में ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी, पोलैंड; पूर्व सोवियत संघ में यूक्रेन, यूराल, कज़ेनेत्स्क, बेकाल एवं बालकश झील क्षेत्रों तथा जापान के खनिज संसाधन क्षेत्रों तक फैला है। इन औद्योगिक प्रदेशों के विकास में कोयले और लोह खनिज संसाधनों का विशेष महत्व रहा है। इनके अतिरिक्त मैंगनीज, जस्ता, सीसा, चाँदी, सोना, ऐण्टिमनी आदि खनिज भी यहाँ मिलते हैं।

इस प्रदेश में कोयले का खनन (i) संयुक्त राज्य अमेरिका में अप्लेशियन क्षेत्र, आन्तरिक क्षेत्र, खाड़ी तटीय क्षेत्र, प्रशान्त महासागर तटीय क्षेत्र, उत्तरी मैदानी क्षेत्र एवं राकी पर्वतीय क्षेत्रों से; (ii) यूरोप में ग्रेट ब्रिटेन के कोयला क्षेत्रों—लंकाशायर, यार्कशायर, डर्बी-नार्थम्बरलैंड, डरहम, मिडलैंड्स, वेल्स, ब्रिस्टल, कम्बरलैंड, कैंट और स्कॉटिश कोयला क्षेत्र; फ्रांस-बेल्जियम, नीदरलैंड्स कोयला क्षेत्र, रूहर, सार, सक्सैनी, साइलेशिया आदि, (iii) पूर्व सोवियत संघ के दोनेत्स बेसिन कजनेत्स्क बेसिन, कारागैन्दा, तुला-मास्को और यूराल क्षेत्र, साइबेरिया कोयला क्षेत्र; (iv) जापान में उत्तरी पश्चिमी क्यूशू, दक्षिणी होन्शु तथा हाकेडो में किया जाता है। लोह-अयस्क का खनन संयुक्त राज्य अमेरिका में सुपीरियर झील प्रदेश से; यूरोप में फ्रांस में लारेन, स्वीडन में किरुना और गैलिवेयर एवं ग्रोगेजबर्ग, ब्रिटेन में नार्थम्पटन, क्लीवलैंड, कोरबी एवं स्केनथोर्प में, स्पेन में बिलबाओ, सेन्तान्देर, गिबोन एवं ओविडो से; पूर्व सोवियत संघ में क्रिवोय रॉक, मैगनितोगोर्स्क, ओर्स्क, निझनी-तागिल, इवदेल, गोरनारायाशोरिया (कजनेस्कीय) तथा कर्च से किया जाता है।

उपरोक्त कोयला एवं लोहा क्षेत्रों में बृहद् निर्माण उद्योगों की स्थापना हो गई है, जिससे स्पष्ट रूप से सम्पूर्ण क्षेत्र की दृश्य भूमि में उद्योगों की विशिष्ट संगति प्रदर्शित होती है। इन क्षेत्रों में जनसंख्या की अधिक सघनता पायी जाती है।

संयुक्त राज्य में बृहद् निर्माण उद्योग के क्षेत्र मुख्यतः (i) **पिट्सबर्ग-क्लीवलैंड क्षेत्र**—पिट्सबर्ग, यंगसटाउन, व्हीलिंग, जोहन्सटाउन, स्टेनहेनविले, बीवर, फॉल्स, क्लीवलैंड, कैण्टन आदि; (ii) **मध्य अटलांटिक क्षेत्र**—न्यूयार्क, फिलाडेलफिया, बाल्टीमोर, जर्सीसिटी, टेण्टन, विल्मिगटन, हेरिसबर्ग, न्यूज़पोर्ट न्यूज, नारफोक, आदि, (iii) **दक्षिणी न्यू इंग्लैंड राज्य**—फॉल रिवर, बोस्टन, मानचेस्टर, वोर्सेस्टर, स्प्रिंगफील्ड, हार्टफोर्ड, लारेन्स, ब्रिजपोर्ट आदि; (iv) **डेट्रायट क्षेत्र**—डेट्रायट, लान्सिग, फ्लिन्ट, जेकसन और टोलेडो, आदि; (v) **मिशिगन झील क्षेत्र**—शिकागो, गैरी, मिलवाकी एवं (vi) **दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र**—ग्रीन्सबरो, रैले, चार-लोट्टे, स्पोर्टन बर्ग, ग्रीनविले, कोलम्बिया, ऑगस्टा, अटलाण्टा, मोंटगोमरी, बर्मिंघम आदि हैं। **कनाडा** में निर्माण औद्योगिक क्षेत्र मुख्यतः मॉण्ट्रियल, क्वेबेक, आण्टेरियो, हेमिल्टन, सडबरी, ओटावा, ब्राण्टफोर्ड,

Scanned with CamScanner

सेंट केथरीन, सॉल्ट-सेंट-मेरी, वेंकूवर आदि हैं। **पूर्व सोवियत संघ** में खनिजों के अधिक उपयोग एवं बृहद् निर्माण क्षेत्र मुख्यतः (1) **यूक्रेन प्रदेश** (i) दोनेत्स्क, वोल्गोग्राद, माकेयेवका, लुगान्स्क नीपरोझर-झिन्स्क नीपरोपीतरोवस्क, झापोरोझये और किरोवोग्राद, आदि; (ii) **क्रिवोय रॉक क्षेत्र**—क्रिवोय रॉक, निकोलाएव, खैरसन, ओदेसा; (iii) **अजोब सागर तटीय क्षेत्र**—रोस्तोव, जदानोव, कर्च, क्रेस्नोदार, (iv) **किएव, खारकोव** एवं **ओरेनबर्ग**; (2) मास्को इवानोवो-गोर्की-तुला-कर्स्क; (3) **यूराल क्षेत्र**—ओरस्क, मैगनितोगोर्स्क, तागिल, क्रेस्नो यूरालस्क, स्वर्दलोवस्क, चेल्याबिन्स्क, पर्म, उफा, सेरोव, क्वीबिशेव; (4) लेनिनग्राद, तल्लिन रीगा क्षेत्र; (5) **कज़नेत्स्क बेसिन**—नोवोसिबिर्स्क, तोमस्क, केमेरोवो, बरनॉल, नोवोकज़नेत्स्क; (6) कारागैन्दा, (7) **मध्य एशिया**—ताशकन्द, समरकन्द, फ्रुंजे, दुयुशाम्बे, आल्मा आता; (8) **बेकाल क्षेत्र**—इर्कुटस्क, चेरेमखोवो, उल्लान-उदेक्रास्नोयार्स्क; (9) **काकेशस क्षेत्र**—तबिलिसी, बाकू, बातूम, ग्रोज़ेने, माइकोप; (10) **सूदूर-पूर्व के क्षेत्र**—खाबरोवस्क, कोमसोमोलस्क और बलादिवोस्तोक हैं।

यूरोप की औद्योगिक पेटी उत्तरी आयरलैण्ड और मध्य स्कॉटलैण्ड से लेकर दक्षिणी पोलैण्ड और चेक एवं स्लोवाक गण० तक चली गई है। इसमें मुख्य निर्माण क्षेत्र निम्नलिखित हैं—(1) **यूनाइटेड किंगडम** के औद्योगिक क्षेत्र—(i) **लंकाशायर क्षेत्र**—मानचेस्टर, वारमिंगटन चेस्टर, लिवरपूल, ब्लेकबर्न, स्कॉटपोर्ट आदि; (ii) **यार्कशायर क्षेत्र**—ब्रेडफोर्ड, योर्क, हेलिफ़ेक्स, शैफ़ील्ड, डर्बी, नॉटिंघम आदि; (iii) **नार्थम्बर-लैण्ड-डरहम-क्षेत्र**—मिडिल्स बरो, यूकेसिल, हार्टपूल, स्टॉकटन, डरहम, सीडम आदि; (iv) **मिडलैण्ड्स क्षेत्र**—बरमिंघम, क्वेण्ट्री लीमिंगटन, श्रूज, हेम्पटन, आदि; (v) **वेल्स क्षेत्र**—चेस्टर, फिलेन्टशायर, कार्डिफ, न्यूज़पोर्ट, आदि; (vi) **ब्रिस्टल,** (vii) **कम्बरलैंड**—कारलिस्ले; (viii) **क्लाइड घाटी**—ग्लासगी; (ix) लन्दन क्षेत्र। (2) **रूहर क्षेत्र (जर्मनी)**—डुईबर्ग, डार्टमण्ड, एसेन, बोचम, गेल्सेन्किरचेन, दुसेल, दीर्फ, वुप्परटव, कौलन, सासेनबर्ग, आदि।

उपरोक्त के अतिरिक्त बेल्जियम के मुख्य औद्योगिक केन्द्र—ब्रुस्ल्स, एण्टबर्थ, मोन्स, चार्लेराय, नामूर और लीज़ हैं। नीदरलैंड्स में एम्सटर्डम; फ्रांस में लिले, लैन्ज़, नान्सी, दन्कर्क, लुनविले, स्ट्रासबर्ग देनाइन एवं हॉवमोण्ट और ज्यूमोण्ट, लीक्रियोज़ोट, कमेण्ट्री, क्लेरमोण्ट, लियोन्स, बोर्डियो, मारसली, मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं। इटली के मुख्य औद्योगिक क्षेत्र—त्यूरिन, मिलान, वेनिस, ब्रेस्सिया, बेरोना, जेनोआ, नेपिल्स, फ्लोरेंस हैं। जर्मनी एवं चेक एवं स्लोवाक गण० के बृहद् निर्माण उद्योग क्षेत्र—फ्रुस्तेन्बर्ग, काल्बे, लीपजिंग, मर्सबर्ग बर्नबर्ग, फ्रीबर्ग, मीज़ेन, बर्लिन, आदि हैं। पोलैण्ड में रातीबोर, ग्लेइविट्ज़ (ब्रोसलो), वारसा, कातोविस, ओपेल, क्रेकाऊ, लोद्ज़, फ्रेंकफर्ट, आदि प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं।

जापान में बृहद्-निर्माण उद्योगों के प्रदेश—(i) **क्वान्तो क्षेत्र**—टोकियो, याकोहामा, कावासाकी, चीबा, इथिकावा, कावागुची, हिताची, उरावा, कोनोसू, शिमोदोने; (ii) **नागोया क्षेत्र**—नागोया, गिफू, ओकाज़ाकी, तायोहाशी, कामेयामा, तोबा, तसू आदि; (iii) **किन्की क्षेत्र**—कोबे, ओसाका, क्योटो, हिमेज़ी, सकाई, फ्यूज़े, वाकायामा, यवाता, अमागासाकी, (iv) हिरोशिमा, कुरे, नोमी, ओकायामा, मत्सूयामा, ताकामात्सू, कूबा आदि; (v) **किताक्यूशू क्षेत्र**—नागासाकी, शिमोगोसेकी, मोजी, कोकुरा, बाकामात्सू, आदि हैं।

[II] मध्यस्तरीय विकसित संसाधन प्रदेश

1. भूमध्यसागरीय प्रदेश—ये प्रदेश उत्तरी गोलार्ध में 30° से 45° अक्षांशों के मध्य तथा दक्षिणी गोलार्ध में 30° से 40° अक्षांश के मध्य, महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर स्थित हैं। इस प्रकार के प्रदेशों की अवस्थिति भूतल पर निम्न भाग में है—(i) भूमध्य सागर के समीपवर्ती देश—स्पेन, पुर्तगाल, दक्षिणी फ्रांस, इटली, प्रायद्वीप, यूगोस्लाविया, बोलकान प्रायद्वीप, सीरिया, इजरायल, अफ्रीका के उत्तरी तटीय क्षेत्र—मोरक्को, ट्यूनिशिया एवं उत्तरी अल्जीरिया; (ii) पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका में कैलिफोर्निया की घाटी; (iii) दक्षिणी अमेरिका के मध्य चिली; (iv) अफ्रीका के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में केप प्रान्त, और (v) दक्षिणी-पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया तथा उत्तरी न्यूज़ीलैंड।

इन प्रदेशों की जलवायु समशीतोष्ण है। यहाँ गर्मी की ऋतु शुष्क एवं धूपदार होती है एवं ग्रीष्म ऋतु में पछुवा पवनों से वर्षा होती है, जिसकी मात्रा 40 सेमी से 80 सेमी तक रहती है। इन प्रदेशों का औसत तापक्रम 15°C रहता है। ग्रीष्म ऋतु में वर्षा न होने के कारण सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।

ये प्रदेश फल उत्पादक क्षेत्र कहलाते हैं। इन क्षेत्रों में पैडोकल मिट्टियाँ पाई जाती हैं जो लाल या भूरे रंग की होती हैं तथा 'टैरा रौसा' (Terra Rosha) के नाम से पुकारी जाती हैं।

यह मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं होती। ढालों पर इसकी पतली परतें होने के कारण ही वहाँ मुख्यतः भेड़ और बकरियों का पशुचारण होता है तथा असिंचित फलदार वृक्षों के बाग हैं। जैतून, खूबानी, अंजीर, अंगूर तथा सूखे मेवों का उत्पादन बिना किसी चौड़ाई के हो जाता है। इसके अलावा खट्टे रसदार फलों (citrus fruits) जैसे—नींबू, संतरा, चकोतरा, नारंगी, आदि को भी उत्पादित किया जाता है। अंगूरों को सुखाकर

Scanned with CamScanner

मुनक्का, किशमिशें एवं शराब बनायी जाती है। शुष्क ग्रीष्म ऋतु में सेब, नाशपाती, अंगूर, अलूचा की फसलें सिंचाई द्वारा उत्पन्न की जाती हैं। इन फलों को अन्य यूरोपीय देशों को निर्यात कर दिया जाता है।

कृषि की फसलों में खाद्यान्नों में गेहूँ, जौ और मक्का तथा सब्जियों में आलू, मटर, सेम, गाजर, बन्दगोभी, टमाटर, प्याज, चुकन्दर आदि उत्पन्न की जाती हैं।

इन प्रदेशों में शक्ति संसाधनों की कमी है। कोयला तथा खनिज तेल बहुत न्यून मात्रा में उपलब्ध है। परन्तु कुछ भागों में जलविद्युत उत्पादन के लिये अनुकूल दशायें मिलती हैं। केवल इटली में जलविद्युत का अधिक विकास हो पाया है। खनिज संसाधनों में अधिक लोहा मुख्यत: स्पेन, मोरक्को, तथा अल्जीरिया में पाया जाता है। इसके अलावा, स्पेन में ताँबा, गंधक, पोटाश एवं लोह-मिश्र धातुएँ; इटली में गंधक एवं पारा तथा यूनान में लोहा, जस्ता, सीसा, मैंगनीज, बॉक्साइट, आदि खनिज पाये जाते हैं। परन्तु शक्ति संसाधनों की न्यूनता के कारण यहाँ निर्माण उद्योग बहुत कम हैं।

2. एशियाई प्रगतिशील विकास के क्षेत्र—इस क्षेत्र के अन्तर्गत एशिया के प्रगतिशील देश भारत, चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, कोरिया, म्यानमार तथा दक्षिणी पूर्वी एशियाई देश सम्मिलित हैं। इन क्षेत्रों की प्रमुख विशेषता जनसंख्या की बाहुल्यता है। इस क्षेत्र में संसार की लगभग 70% जनसंख्या निवास करती है। इस क्षेत्र का विस्तार 55° उ० अक्षांश से 10° दक्षिणी अक्षांश के मध्य स्थित एशियाई भाग में पाया जाता है। परन्तु इसमें हिमालय पर्वत, मध्य एशिया का मरुस्थलीय क्षेत्र तथा जापान (जो कि एक विकसित राष्ट्र है) सम्मिलित नहीं किये जाते हैं।

इस प्रदेश की जलवायु मानसूनी है जिसकी प्रमुख विशेषता यह है कि ग्रीष्म ऋतु गर्म एवं आर्द्र तथा शीत ऋतु सामान्यत: ठण्डी एवं शुष्क होती है। यहाँ की कुल वार्षिक वर्षा की लगभग 80% मात्रा केवल 4 या 5 महीनों में ही प्राप्त हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु का औसत तापक्रम 26.7°C तक रहता है। इसमें जून के महीने में सर्वाधिक तापमान लगभग 38°C तक पहुँच जाता है। शीत ऋतु में औसत तापमान 18°C तक पाया जाता है। इस प्रकार इस प्रदेश में मुख्यत: तीन ऋतुयें होती हैं—(i) ग्रीष्म ऋतु, (ii) वर्षा ऋतु तथा (iii) शीत ऋतु। उत्तरी गोलार्ध में मार्च के महीने में जून तक ग्रीष्म ऋतु, जौलाई से अक्टूबर तक वर्षा ऋतु तथा नवम्बर से फरवरी तक शीत ऋतु रहती है। दक्षिणी गोलार्ध में इसके विपरीत ऋतु क्रम पाया जाता है।

इन क्षेत्रों की जलवायु कृषि के लिये उपयुक्त है। नदियों के द्वारा बहाकर लाई गई जलोढ मिट्टी से निर्मित मैदान बहुत उपजाऊ हैं। अधिक जनसंख्या की खाद्यपूर्ति के लिए यहाँ गहन कृषि को प्रोत्साहन मिला है। यहाँ अधिकांशत: व्यापार की अपेक्षा जीवन-निर्वाह के लिये कृषि की जाती है। इस प्रकार इस मानसूनी क्षेत्र की सघन जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। यहाँ की प्रमुख फसल चावल है। सघन जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए यहाँ चावल सर्वाधिक मात्रा में उत्पादित किया जाता है। इसके अतिरिक्त जूट, कपास, गन्ना, गेहूँ, चाय तथा तिलहन की फसलें भी उगायी जाती हैं।

इस क्षेत्र में यद्यपि खनिज-उद्योगों का तेज़ी से विकास किया जा रहा है, परन्तु जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण उसकी उपलब्धि कम रह जाती है। उत्तरी-पूर्वी भारत, उत्तरी पूर्वी चीन तथा मंचूरिया में उद्योगों का विकास किया गया है। चीन के कोयला क्षेत्र मुख्यत: उत्तरी पूर्वी भाग के फुशुन (Fushun) और मध्य चीन में यांग्ट्सी की घाटी में, शैन्सी तथा शान्टुंग प्रायद्वीप में पाये जाते हैं। भारत के प्रमुख कोयला क्षेत्र दामोदर घाटी में रानीगंज, झरिया, बोकारो, गिरीडीह; महानदी की घाटी में कोरबा, सनहट, तिलचिर, आदि और सोन तथा गोदावरी नदियों की घाटियों में अवस्थित हैं। इन क्षेत्रों के समीप ही लोहे की खानें होने के कारण यहाँ लोह-इस्पात उद्योग बृहद् पैमाने पर विकसित हुआ है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी-पूर्वी-एशिया से पेट्रोलियम को प्राप्त किया जा रहा है। इस प्रकार ये प्रदेश औद्योगिक विकास के सम्भावित क्षेत्र हैं।

भारत के संसाधन प्रदेश
(Resource Regions of India)

भारत को संसाधन प्रदेशों में वर्गीकृत करने के लिये प्राकृतिक वातावरण अर्थात् भौतिक दशाओं—भूमि की बनावट, भूगर्भिक बनावट, मिट्टी, वनस्पति, खनिज एवं शक्ति संसाधनों की उपलब्धि, आदि तथा सांस्कृतिक वातावरण फसलों का प्रतिरूप, सिंचाई, खनिज उद्योगों के विकास, जनसंख्या दशायें एवं भविष्य में संसाधन विकास की सम्भावनाओं को आधार-तत्व माना गया है। योजना आयोग (Planning Commission) ने प्राकृतिक वातावरण के आधार पर सर्वप्रथम भारत को निम्नलिखित पाँच प्राथमिक प्रदेशों में रखा है—(i) हिमालय एवं सम्बन्धित पहाड़ियाँ, (ii) उत्तरी बृहद् मैदान, (iii) प्रायद्वीपीय पठारी भाग तथा पहाड़ियाँ, (iv) पश्चिमी तटीय मैदान, (v) पूर्वी तटीय मैदान।

उपरोक्त प्राथमिक प्रदेशों को योजना आयोग ने चौदह संसाधन विकास प्रदेशों (Resource development regions) में वर्गीकृत किया है। इसके अनुसार हिमालय प्रदेश को दो, उत्तरी मैदान को पाँच, प्रायद्वीपीय पठार को चार, और पश्चिमी तटीय मैदान को दो संसाधन विकास प्रदेशों में वर्गीकृत किया गया है। एक पूर्वी तटीय मैदान का संसाधन विकास प्रदेश है। इसके अतिरिक्त एक पृथक् प्रदेश के

Scanned with CamScanner

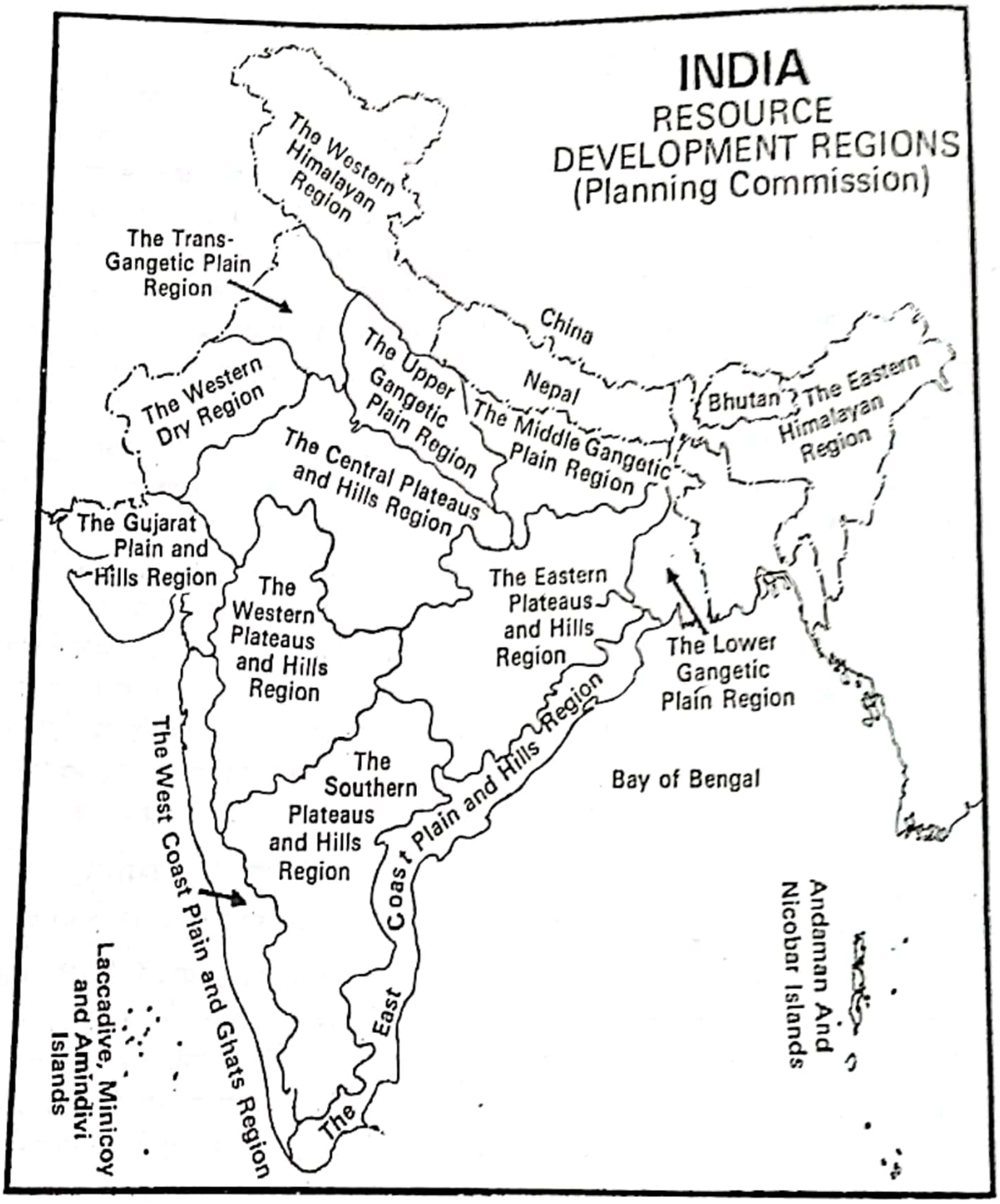

चित्र 2. भारत के संसाधन विकास प्रदेश (योजना आयोग के अनुसार)।

अन्तर्गत द्वीप समूहों अर्थात् बंगाल की खाड़ी के अण्डमान व निकोबार द्वीप समूहों और अरब सागर के लक्षद्वीवी, मिनिकोय एवं अमिनद्वीवी द्वीप समूहों का भी विचार किया गया है।

[I] हिमालय प्रदेश

इस प्रदेश को निम्नलिखित दो संसाधन विकास प्रदेशों में बाँटा गया है—

(1) पश्चिमी हिमालय प्रदेश (Western Himalayan region),

(2) पूर्वी हिमालय प्रदेश (Eastern Himalayan region)।

1. पश्चिमी हिमालय प्रदेश—इस प्रदेश का क्षेत्रफल (जम्मू कश्मीर के अलावा) 68 हजार वर्ग किमी तथा यहाँ की जनसंख्या लगभग 1.5 करोड़ है। इस प्रदेश को योजना आयोग ने चार उपविभागों में वर्गीकृत किया है—(i) उत्तर प्रदेश हिमालय, (ii) पंजाब हिमालय, (iii) हिमाचल प्रदेश और (iv) जम्मू-कश्मीर हिमालय।

इस सम्पूर्ण क्षेत्र में मुख्य आर्थिक संसाधन कोणधारी वन हैं। इनसे कागज तथा दियासलाई उद्योग के लिये कच्चा माल तथा इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। यहाँ चौड़ी पत्ती के ओक वृक्ष तथा नुकीली पत्ती वाले चीड़ तथा देवदार के वृक्ष मिलते

Scanned with CamScanner

है। पंजाब-कुमायूँ हिमालय में पाये जाने वाले वन हिमालय के सम्पूर्ण वनों का 20% है। यहाँ देवदार, चीड़ और सवाई घास मुख्य वनस्पति है।

जलविद्युत उत्पादन के लिये यहाँ प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध है। यहाँ कश्मीर हिमालय में लगभग 70 लाख किलोवाट सम्भाव्य जल शक्ति पायी जाती है, जो बृहद् हिमालय की सम्भाव्य शक्ति की 25% है। खनिज संसाधनों के संचित भण्डारों में मुख्य चूना प्रस्तर, बॉक्साइट, जिप्सम तथा डोलोमाइट के भण्डार हैं। शिवालिक श्रेणियों में कोयला (एन्थ्रेसाइट) तथा लोह-प्रस्तर (iron-stone) पाया जाता है। यहाँ कश्मीर तथा देहरादून के क्षेत्र में सघन जनसंख्या मिलती है।

2. पूर्वी हिमालय प्रदेश—योजना आयोग ने इस संसाधन विकास प्रदेश को निम्नांकित उपविभागों में वर्गीकृत किया है—

(a) ***हिमालय उपप्रदेश***—(i) अरुणाचल प्रदेश, (ii) पश्चिमी बंगाल एवं सिक्किम हिमालय।

(b) ***आसाम और सम्बन्धित पर्वतीय उपप्रदेश***—(i) आसाम पहाड़ियाँ, (ii) नागालैण्ड, (iii) मणिपुर, (iv) त्रिपुरा।

(c) ***समतल उपप्रदेश***—(i) ब्रह्मपुत्र और सोन घाटी, (ii) पश्चिमी बंगाल हिमालयन समतलीय उपप्रदेश।

इस प्रदेश में वर्षा बहुत अधिक (150 सेमी से 300 सेमी तक) होती है। चेरापूंजी में यह मात्रा 800 सेमी तक मिलती है। इस भारी वर्षा के कारण यहाँ घाटी क्षेत्रों में बाढ़ें आती हैं। आसाम हिमालय में उष्ण तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय वन मिलते हैं। पश्चिमी बंगाल हिमालय में लगभग 80 लाख हेक्टेयर भूमि पर वन पाये जाते हैं। यहाँ मुख्यतः साल और ओक के वृक्ष मिलते हैं। पूर्वी भाग में ढलवाँ भूमि पर नीचे बांस तथा ऊपर ऊँचाई पर स्प्रूस तथा ओक मिलते हैं। यहाँ के वन चलवासी कृषि के कारण कम होते जा रहे हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी एवं उसकी सहायक नदी घाटियों में जलविद्युत शक्ति उत्पादन की काफी सम्भावनायें हैं बृहद् हिमालय की सम्भाव्य जल शक्ति का 20% के लगभग इस क्षेत्र में मिलता है। बारापानी, उम्त्रू तथा लीमाखोंग एवं उमियम आदि नदियों पर जलविद्युत उत्पादन किया जा रहा है।

इस प्रदेश में पश्चिम बंगाल हिमालय से भूरा कोयला (लिग्नाइट), भूटान के सीमावर्ती भाग में डोलोमाइट युक्त चूना प्रस्तर, खासी-जयन्तिया पहाड़ियों में शीशा बालू तथा कोयला मिलता है। गारो तथा नागालैण्ड में भी कोयले तथा चूना प्रस्तर के भण्डार हैं।

इस प्रदेश में गारो, खासी, नागा, संथाल, आदि जन-जातियाँ निवास करती हैं। यहाँ असम और दार्जिलिंग की पहाड़ियों पर भारत के कुल चाय उत्पादन का 80% उत्पादन होता है। यहाँ चाय की कृषि के विकास के मुख्य कारण अनुकूल जलवायु, उर्वरा मिट्टी और हल्की ढलवाँ भूमि इत्यादि दशायें हैं। मेघालय के पठारी भाग पर अनानास, नारंगी, आदि फल उगाये जाते हैं।

[II] उत्तरी बृहत् मैदान

इस प्रदेश को योजना आयोग द्वारा निम्नलिखित पाँच संसाधन विकास प्रदेशों में वर्गीकृत किया गया है—

(1) गंगा का निम्न मैदानी प्रदेश (Lower Gangetic plain region),

(2) गंगा का मध्य मैदानी प्रदेश (Middle Gangetic plain region),

(3) गंगा का ऊपरी मैदानी प्रदेश (Upper Gangetic plain region),

(4) गंगा-पारीय मैदानी प्रदेश (Trans Gangetic plain region),

(5) पश्चिमी शुष्क प्रदेश (Western dry region)।

इस सम्पूर्ण प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 5.5 लाख वर्ग किमी है। इसमें लगभग 28 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार उत्तरी मैदान क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा तथा सघन बसा हुआ प्रदेश है। यह जलोढ मिट्टी से बना एक निम्न भूमि मैदान है, जो सारे देश के लगभग 20% क्षेत्रफल में फैला है। गंगा-मैदान के ऊपरी भाग में 80 से 100 सेमी, मध्य भाग में 100 से 150 सेमी तथा निम्न डेल्टाई भाग में 140 सेमी से 180 सेमी तक वर्षा होती है, परन्तु पश्चिमी शुष्क प्रदेश अर्थात् राजस्थान वाले भाग में केवल 25 सेमी तक ही वर्षा होती है।

इस प्रदेश में पतझड़ वन एवं चरागाह पाये जाते हैं। इस मैदान के हरियाणा क्षेत्र में 80 हजार हेक्टेयर तथा राजस्थान वाले भाग में लगभग 8 हजार हेक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक चरागाह हैं। निम्न मैदानी प्रदेश अर्थात् डेल्टा के दलदली क्षेत्र में मैंग्रोव (mangrove) के वृक्ष मिलते हैं।

गंगा-मैदान के ऊपरी भाग के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में लोह-अयस्क, चूना प्रस्तर तथा जिप्सम; राजस्थान के मैदानी भाग में ताँबा, कैलसाइट, शीशा बालू तथा बैन्टोनाइट; मध्य गंगा मैदान में अभ्रक, डोलोमाइट, तथा चीनी मिट्टी, आदि खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। निम्न मैदानी भाग में कोयले के भण्डार (लगभग 132 करोड़ मीटरी टन) हैं। ब्रह्मपुत्र घाटी में पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस के भण्डार हैं।

गंगा यमुना दोआब के जल संसाधन का सिंचाई के लिये प्रयोग किया जा रहा है। इससे लगभग एक मिलियन हेक्टेयर भूमि सिंचित की जा चुकी है। पंजाब के उत्तरी मैदानी भाग में भूमिगत जल (underground water) संसाधन उपलब्ध हैं।

Scanned with CamScanner

साथ ही यहाँ सतलज नदी से जलविद्युत उत्पादन प्राप्त किया जा रहा है। मध्य गंगा मैदान में घाघरा, गंडक और कोसी नदियों के जल को विद्युत उत्पादन तथा सिंचाई के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। दामोदर नदी के जल को भी विद्युत उत्पादन एवं इस क्षेत्र में सिंचाई के लिये प्रयोग किया जा रहा है।

गंगा के ऊपरी तथा मध्यवर्ती मैदानी प्रदेश में गेहूँ, गन्ना, चावल, कपास, मक्का, दालें और ज्वार-बाजरा की फसलें उत्पन्न की जाती हैं। निम्न गंगा मैदान में चावल और डेल्टाई क्षेत्र की मिट्टियों में जूट की कृषि की जाती है। राजस्थान अर्थात् पश्चिमी शुष्क प्रदेश वाले भाग को छोड़कर सभी मैदानी भाग में जनसंख्या का घनत्व अधिक है।

[III] प्रायद्वीपीय पठारी भाग तथा पहाड़ियाँ

योजना आयोग ने इस प्रदेश को निम्नलिखित चार संसाधन विकास प्रदेशों में वर्गीकृत किया है—

(1) पश्चिमी पठारी और पहाड़ी प्रदेश (Western plateaus and hills region),

(2) मध्यवर्ती पठारी और पहाड़ी प्रदेश (Central plateaus and hills region),

(3) पूर्वी पठारी और पहाड़ी प्रदेश (Eastern plateaus and hills region),

(4) दक्षिणी पठारी और पहाड़ी प्रदेश (Southern plateaus and hills region) ।

प्रायद्वीपीय पठारी और पहाड़ी प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 15 लाख वर्ग किमी है, जिसमें लगभग 26 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। इसके पश्चिमी भाग में 70 सेमी, मध्य भाग में 60 से 100 सेमी तक, पूर्वी भाग में 120 से 170 सेमी तथा दक्षिणी भाग में 100 सेमी तक वर्षा होती है। यह प्रदेश उष्ण कटिबन्धीय जलवायु (tropical climate) की विशेषताएँ रखता है। पश्चिमी भाग में मालवा पठारी क्षेत्र पर सागौन, शीशम, चन्दन के वृक्ष मिलते हैं। दक्षिणी भाग में नीलगिरि पहाड़ियों पर भी पतझड़ वाले वन मिलते हैं। पूर्वी भाग में सागौन, साल, बाँस के वन तथा सवाई घास पायी जाती है।

इस पठारी प्रदेश में कृषि संसाधन बहुतायत में पाये जाते हैं। इसके पूर्वी भाग में छोटा नागपुर पठारी क्षेत्र खनिजों की दृष्टि से बहुत धनी है। यहाँ लोह-अयस्क, कोयले, ताँबे, डोलोमाइट, बॉक्साइट के विशाल भण्डार हैं। भारत का लगभग 60% लोह-अयस्क, 66% कोयला, 65% डोलोमाइट तथा 90% ताँबा यहीं मिलता है। इसके अलावा चूना प्रस्तर और अभ्रक के भी भण्डार पाये जाते हैं। उड़ीसा की पहाड़ियों में लोह-अयस्क, बॉक्साइट, ताँबा, जिप्सम और मैंगनीज आदि खनिज पाये जाते हैं। **मध्य पठारी भाग** में अरावली क्षेत्र में सीसा, जस्ता, लोह-अयस्क, मैंगनीज़ तथा चूना प्रस्तर, आदि खनिज मिलते हैं। बुन्देलखण्ड और चम्बल बेसिन में संगमरमर प्रस्तर मिलता है। **पश्चिमी भाग** के मालवा पठारी क्षेत्र में ऐस्बेस्टॉस, चूना प्रस्तर, बॉक्साइट, मैंगनीज़, चीनी मिट्टी और विन्ध्यन प्रदेश से हीरा निकाला जाता है। **दक्षिणी पठारी भाग** में मिलने वाले मुख्य खनिज मैंगनीज़, बॉक्साइट, जिप्सम, चीनी मिट्टी, ग्रेफाइट तथा चूना प्रस्तर हैं। गोदावरी घाटी में कोयले के वृहद् भण्डार मिलते हैं। कर्नाटक के पठारी भाग में सोना, लोहा, मैंगनीज तथा बॉक्साइट खनिजों का खनन किया जाता है।

इस प्रदेश में सिंचाई तथा जलविद्युत उत्पादन के लिये सम्भाव्य जल शक्ति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। चम्बल बेसिन में 6 लाख हेक्टेयर सिंचित भूमि तथा एक लाख किलोवाट जलविद्युत उत्पादन की सम्भाव्य क्षमता है। मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ बेसिन में 12 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई सम्भाव्य मिलती है। बस्तर के पठारी भाग में 80 लाख किलोवाट सम्भाव्य जलविद्युत उत्पादन क्षमता है। कावेरी तथा तुंगभद्रा नदियों में 10 लाख किलोवाट जलविद्युत शक्ति का सम्भावित स्रोत है।

इस प्रदेश में कपास की कृषि के लिए लावा से बनी काली मिट्टी बहुत उपयुक्त है, जो कि पश्चिमी भाग में महाराष्ट्र में मिलती है। शेष पठारी भाग में लाल मिट्टी पायी जाती है जो अधिक ऊपजाऊ नहीं है। पश्चिमी पठारी भाग में कपास, पूर्वी भाग में चावल, मध्य भाग में गेहूँ एवं मोटे अनाज तथा दक्षिणी भाग में ज्वार-बाजरा, गन्ना तथा कपास की फसल उगायी जाती है। नीलगिरि की पहाड़ियों पर चाय भी पैदा की जाती है।

इस प्रदेश में राँची पठार, बंगलुरु, चेन्नई और पुणे का समीपवर्ती भाग अधिक विकसित तथा घने बसे हैं; जिनके विकास का मुख्य कारण यहाँ उद्योगों का केन्द्रित होना है।

[IV] पश्चिमी तट

योजना आयोग ने इस क्षेत्र को दो संसाधन विकास प्रदेशों में वर्गीकृत किया है—

(1) पश्चिमी तटीय मैदान तथा घाट प्रदेश

(2) गुजरात का मैदान तथा पहाड़ी प्रदेश।

पश्चिमी तटीय मैदान तथा घाट प्रदेश उत्तर में मुम्बई से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी अन्तरीप तक अवस्थित है। इस भाग का क्षेत्रफल लगभग 1 लाख वर्ग किमी तथा जनसंख्या लगभग 6 करोड़ है। गुजरात के मैदानों तथा पहाड़ी प्रदेश में लगभग 3 करोड़ जनसंख्या है। पश्चिमी तटीय मैदान एवं घाट प्रदेश में वर्षा बहुत अधिक (300 सेमी तक) होती है। इस प्रदेश में कटिबन्धीय वन मिलते हैं।

Scanned with CamScanner

कर्नाटक के तटवर्ती भाग पर मैंगनीज़ (10 लाख मीटरी टन) तथा गोवा में लोह-अयस्क (लगभग 8000 लाख मीटरी टन) के भण्डार मिलते हैं। कच्छ प्रायद्वीप में चूना प्रस्तर, बॉक्साइट तथा भूरा कोयला (लिग्नाइट) पाया जाता है। अंकलेश्वर में पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस के भण्डार हैं। इसके अलावा चीनी मिट्टी, मोनाजाइट तथा जिरकोन बालू एवं नमक भी इस प्रदेश में मिलते हैं।

गुजरात के मैदानी भाग में धरातलीय जल से लगभग 14 लाख हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई सम्भाव्य है। पश्चिमी घाटों पर जलविद्युत उत्पादन की उपयुक्त दशायें मिलती हैं। गुजरात के मैदानी क्षेत्र में लगभग 1 लाख हेक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक चरागाहें हैं। यहाँ पर मुख्यत: चावल की फसल, मसाले और नारियल उगाये जाते हैं। तटीय भागों से मछली पकड़ी जाती है।

[V] पूर्वी तट

यह प्रदेश दक्षिण में कन्याकुमारी अन्तरीप से लेकर उत्तर में बालासोर तक फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग 2 लाख वर्ग किमी है तथा इसकी जनसंख्या लगभग 4 करोड़ है। यहाँ 80 सेमी से 120 सेमी तक वर्षा होती है। उड़ीसा में इसकी मात्रा 160 सेमी तक पहुँच जाती है। कृष्णा, कावेरी तथा गोदावरी नदियों के डेल्टाओं में जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है। यहाँ चीनी-मिट्टी, चूना प्रस्तर तथा मैग्नीशियम खनिज के भण्डार हैं। कन्याकुमारी में मोनोजाइट खनिज पाया जाता है। तमिलनाडु के तटीय भाग में नहरों के जल द्वारा लगभग 80 हजार हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है। आन्ध्र तट पर 2 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में जल द्वारा सिंचाई की सम्भाव्यता पायी जाती है। यहाँ का मुख्य उद्यम मछली पकड़ना तथा समुद्री जल से नमक बनाना है। कृषि में यहाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण फसल चावल है।

द्वीप समूह—अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित हैं। इन द्वीपों पर उष्णकटिबन्धीय वन तथा नारियल के वृक्ष उगे हैं। लक्षद्वीवी, मिनिकोय और अमिनद्वीवी द्वीप अरब सागर में स्थित हैं तथा नारियल और ताड़ के वृक्षों से घिरे हैं। यहाँ वनों से प्राप्त लकड़ी—थरवल वुड, साटिन वुड, चुगलाम, पड़ोक, आदि का निर्यात यूरोपीय देशों को होता है। यहाँ प्राप्त होने वाले खनिज क्रोमाइट, ताँबा और लोहे के पायराइट्स तथा कहीं-कहीं कोयला है। इस प्रकार वन तथा समुद्री-सम्पदा यहाँ के प्रमुख संसाधन हैं।

Scanned with CamScanner